संवाद

विद्यार्थी स्वाभाविक तौर पर जिज्ञासु होते हैं। उनकी जिज्ञासा को सही दिशा देने में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। आज शिक्षा के क्षेत्र में कई नवाचार हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इसे और प्रगति दी है। ज़्यादातर हम लोग सिर्फ़ बच्चों को शिक्षित करने के बारे में सोचते रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है कि शिक्षकों का निरंतर सीखते रहना और लगातार विकसित होना। प्राथमिक शिक्षक पत्रिका के माध्यम से हम आपको, शिक्षकों और शोधकर्ताओं के शोध निष्कर्ष एवं विचारों से परिचित कराते रहते हैं।

इस पत्रिका में कुल ग्यारह लेख हैं और जो लेख शामिल हैं उनसे ये विचार उजागर होते हैं कि बच्चों को कार्टून, रंगीन चित्र या साधारण स्केच बहुत अच्छे लगते हैं और शिक्षक एवं अभिभावक बच्चों को सिखाने के लिए कार्टून और रंगीन चित्रों का उपयोग कर रहे हैं तथा इनके प्रयोग से बच्चों के अधिगम में सुधार भी देखा जा रहा है।

गणित शिक्षण तथा मूल्यांकन के लिए शिक्षक गणित मेले को शिक्षण प्रविधि के रूप में प्रयोग कर रहे हैं और शोध में पाया गया है कि गणित मेला विद्यार्थी को कमरे की चारदीवारी से बाहर निकलकर सीखने-सिखाने के अवसर प्रदान कर रहा है। पढ़ने-लिखने की शुरुआत में बच्चों के लिए खेल, चित्र, कहानी आदि का सहारा लिया जाता है। भाषा की कक्षा हो या गणित की गतिविधि आधारित शिक्षा बच्चों के अधिगम में सहायक है।

पाठ्यपुस्तकों में जो चित्र दिए जाते हैं उनका प्रयोग करके शिक्षक विद्यार्थियों को सोचने और अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान कर रहे हैं। लेखन कला पर लेखन उपकरणों का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। अच्छी मूल्यांकन की प्रक्रिया बच्चों के सीखने में मदद करती है। आकलन करने का उद्देश्य यह है कि बच्चों ने कितना सीखा और वह आगे सीखने के लिए कितने तैयार हैं, साथ ही आकलन से यह पता चलता है कि सीखने में कहाँ कमी आ रही है ताकि समय पर सुधार हो सके।

जो बच्चे आँगनबाड़ी में पढ़ने के पश्चात् प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेते हैं, उनकी समझ सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों से अधिक होती है। यह कहा जा सकता है कि आँगनबाड़ी शिक्षा प्रणाली बच्चों के उपलब्धि स्तर में वृद्धि करने के लिए एक सशक्त शिक्षा व्यवस्था है। समावेशी और गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक स्तर तक की शिक्षा सभी बच्चों विशेषकर अभिवंचित समुदाय को प्राप्त हो सके, इसके

लिए सरकार द्वारा बहुत प्रयास किए जा रहे हैं। विद्यालय शिक्षा समिति की सक्रिय भागीदारी से अभिवंचित समुदाय के बच्चों को शिक्षाधिकार दिलाने में मदद मिलती है।

शिक्षा नीति के अनुसार समग्र और बहु-विषयक शिक्षा के विचार को वास्तविक धरातल पर लाने के लिए समस्त उच्चतर शिक्षण संस्थानों के लचीले और नवीन पाठ्यक्रम में क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम और सामुदायिक जुड़ाव एवं सेवा, पर्यावरण शिक्षा और मूल्य शिक्षा आदि क्षेत्र सम्मिलित होंगे तथा इस शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य की समस्त क्षमताओं को एकीकृत तरीके से विकसित करना होगा। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षक और शिक्षार्थियों का संबंध बहुत महत्वपूर्ण है और इसको प्रखर बनाने के उपाय किए जाने चाहिए।

नारी शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बनने के प्रयास की ओर निरंतर अग्रसर है। सरकार की ओर से भी नारी शिक्षा को लेकर अनेक योजनाएँ बनी हैं, जिसको माध्यम से वह लाभान्वित हो रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने ऐसे बहुत से सुझाव दिए हैं जिनको अमल में लाने से शिक्षा के स्तर में सुधार आएगा। अब समय आ गया है कि हम अपनी शिक्षा पद्धति के बारे में पुनर्विचार करें और उसे नए सिरे से तराशें, क्योंकि हमारे पास वर्तमान में पर्याप्त साधन हैं जिनकी मदद से हम बच्चों की शिक्षा के स्तर में सुधार ला सकते हैं।

प्रस्तुत अंक में 'विशेष' के अंतर्गत 'पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र', निष्ठा मॉड्यूल को शामिल किया गया है जो आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगा। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। आप पत्रिका के किसी भी अंक या लेख पर अपने विचार अथवा सुझाव हमें भेज सकते हैं।

शुभकामनाओं सहित।

अकादमिक संपादक